Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 68, December 2020

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 68, दिसंबर 2020

बदलती अर्थनीति और किन्नर समुदाय : परिवर्तन एवं प्रभाव

भावना चोटिया
शोधार्थी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविधालय, उदयपुर (राज.)
मोबाइल न. 8114467348
ईमेल - bhawanachotiya6666@gmail.com

किसी भी मनुष्य के जीवन में अर्थ का महत्वपूर्ण स्थान होता है। मनुष्य का व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक जीवन अर्थ पर ही आधारित होता है। इसी अर्थ के पीछे ही समस्त नीति और अनीति, अन्याय और न्याय के आधार टिके हैं। किसी भी देश और राष्ट्र के समस्त सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था अर्थ की आधारशिला पर ही आधारित है। देश की सशक्त आर्थिक परिस्थितियाँ ही देश की सशक्त सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों का निर्माण करती है, इसीलिए किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास हेतु उन्हें वहाँ के आर्थिक विकास पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

समय के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी बुनियादी आवश्यकताओं के साथ ही साथ रोजगार की माँग को भी बुनियादी अधिकार माना गया। इस हेतु भारतीय संविधान में भी देश के प्रत्येक नागरिक को रोजगार के समान अवसर प्राप्त करने को मौलिक अधिकार के रूप में स्थान दिया गया। बिना लिंगभेद एवं जातिगत विभेदों के समस्त नागरिकों को अधिकार प्राप्त हुआ कि वह अपनी योग्यतानुसार अवसर की समानता का लाभ उठाएँ। यह अवसर की समानता सिर्फ और सिर्फ स्त्री पुरुष खाँचे में बैठे नागरिकों को ही उपलब्ध हुई। स्त्री-पुरुषों के प्रारंभिक दैहिक खाँचों से बाहर के व्यक्ति के लिए यह अवसर की समानता आज भी सिर्फ कोरी कल्पना ही है। यह बाहरी व्यक्ति किन्नर एवं उन्हीं के समान लैंगिक-सामाजिक नियमों में बंधे लोग हैं। जिन्हें शिक्षा, रोजगार के साधन उपलब्ध नहीं है। साधनों की अनुपलब्धता के कारण यह समुदाय निम्न दयनीय आर्थिक स्थिति में जीवनयापन करने को मजबूर है।

आमतौर पर शैक्षिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े होने के कारण किन्नरों को रोजगार के बाजार में कहीं भी स्थान नहीं मिलता। इसी कारण मजबूरी वश अपना पेट पालने के लिए किन्नरों को अपने हिजड़ेपन एवं उससे जुड़ी जलालत को ही गले लगाने के लिए विवश होना पड़ता है। किन्नरों की इसी दयनीय स्थिति के संबंध में लक्ष्मी लिखती हैं, "हिजड़ो के पास बुद्धि नहीं होती? उसके पास प्रतिभा नहीं होती? बल नहीं होता? वह राजनीति में नहीं जा सकते? फौज में नहीं जा सकते? इन बातों को किन तर्कों के आधार पर तय किया गया? आपने कलाकारों, प्रतिभावानों को मजबूर कर दिया पचास पचास रुपए में देह बेचने को, ताली बजाने को।"[1]

आर्थिक संघर्ष को झेलते हुए इन्हें हिजड़ागिरी कर अपने परंपरागत व्यवसाय बधाईगिरी व पाग पर ही आश्रित होना पड़ता है। बधाईगिरी का मतलब किन्नरों द्वारा शुभ अवसरों जिनमें विवाह एवं नए जन्मे बच्चे के समय गीत और नृत्य द्वारा लोगों को शुभ आशीष के बदले बधाई स्वरूप नेक (पैसा) प्राप्त करने से है, तो पाग मांगने से निहितार्थ है, हिजड़ा शरीर होने के कारण बाजार, सार्वजनिक स्थलों, बसों, ट्रेनों आदि स्थानों पर सामान्य जनता से जबरन पैसा वसूलना। हिजड़ो के यही आय के प्रमुख स्रोत हैं इनके अतिरिक्त वर्तमान में घटते रोजगार उपागमों के कारण हिजड़ा समुदाय यौनकर्म की ओर झुक रहा है, इसलिए किन्नर अपनी कमाई मुख्य रूप से बधाईगिरी व यौन कर्मी के रूप में ही करते हैं।

इनमें भी बधाईगिरी किन्नरों का परंपरागत एवं प्रमुख आय का स्रोत है। किसी भी व्यक्ति के घर परिवार में शुभ अवसर पर किन्नर उन्हें आशीष देने व अपने हिस्से का नेक लेने पहुंचते हैं, यही बधाईगिरी कहलाती है। किन्नर समुदाय बधाईगिरी को अपना परंपरागत पर मुख्य आय का साधन मानते हैं। किन्नरों में यह मिथक है कि उन्हें शुभ अवसरों पर नाचने गाने और आशीष देने का काम करने की आज्ञा व जिम्मेदारी भगवान श्रीराम ने दी है। इसीलिए वे भगवान राम की आज्ञा के पालनार्थ बधाई देने का काम करते हैं। 'तीसरी ताली' उपन्यास में डिंपल की पालित पुत्री मंजू अपने प्रेमी फोटोग्राफर विजय को किन्नरों के नाच-गाने से संबंधित इसी मिथक को बताती है-

"हमारे बुजुर्ग बताते हैं कि जब भगवान राम-रावण को मार कर अयोध्या लौटे, तो वहां बड़ा भारी जश्न हुआ। रात भर नाच-गाना चला। काफी रात बीतने के बाद भगवान राम ने कहा कि अब सभी नर-नारी घरों को जाए। भगवान राम ने यह आदेश नर और नारियों को दिया था। लिहाजा जो नर या नारी नहीं थे, वे वही रह गए। भगवान राम के आदेश का उल्लंघन भला वे कैसे कर सकते थे। राम तो मर्यादा पुरुषोत्तम थे। उन्हें जब यह बात पता लगी, तो उन्होंने तीसरी योनि के उन लोगों को नाचने-गाने का वरदान दे दिया। बस तभी से यह लोग नाच गा रहे हैं।"[2]

बधाईगिरी किन्नरों का परंपरागत व्यवसाय होने के साथ-साथ इन्हें रोजगार का एकमात्र विकल्प भी है। बधाईगिरी के माध्यम से ही किन्नर नाच-गा जो भी पैसा कमाते हैं, उसी में जैसे-तैसे गुजारा करते हैं। हिजड़ों द्वारा बधाई मांगने को लक्ष्मी भी स्पष्ट करती हुई कहती है, "असल परंपरा से बधाई बजाना उनका प्रमुख व्यवसाय है। किसी के भी घर में बच्चा पैदा होने पर, घर में शुभ कार्य होने पर, लोग हिजड़ों को बुलाते हैं। बच्चे को, नए जोड़े को आशीर्वाद देने जाते हैं। हिजड़े नाच-गान करते हैं और अपना आशीर्वाद देते हैं। पर ऐसे कितने लोग बधाई करेंगे? उनमें से कितनों का पेट भरेंगे? इसलिए बहुत से अलग-अलग जगहों पर भीख मांगते हैं। कुछ तो सेक्स वर्क करते हैं। कुछ लोग बार में नाचने के लिए जाते हैं। ये कला तो रहती ही है हिजड़ों में।..."[3]

बदलते परिवेश में अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए भी किन्नर अपने परंपरागत व्यवसाय को नहीं छोड़ते। कम पैसे या बधाई मिलने के बावजूद भी हमेशा इसी काम में लगे रहते हैं। विभिन्न उपन्यासों में, कहानियों

में अनेक हिजड़ा पात्र ऐसे हैं, जो अपने परंपरागत व्यवसाय में आने वाली रुकावट के बावजूद यही व्यवसाय लगातार करते हैं। तीसरी ताली की डिंपल व उसकी मंडली के अन्य किन्नर, यमदीप की मेहताब गुरु के चेले नाज़बीबी और छैलू व अन्य किन्नर, दरमियाना कि सुनंदा, तारा आदि किन्नर पात्र ऐसे ही हैं, जो अपने बधाईगिरी के व्यवसाय से ही अपना जीवन यापन करना चाहते हैं।

हिजड़ों की नकारात्मक छवि एवं बढ़ती आधुनिकता के कारण किन्नरों की बधाईगिरी के व्यवसाय में मंदी आई है। गाँव में तो फिर भी लोग किन्नरों को सम्मान दें, उन्हें उचित नेग दे देते हैं, परंतु शहरों में बहुमंजिला इमारतों के बनने से हिजड़ों की सामान्य लोगों तक पहुँच नहीं हो पाती। ऐसे में इनका धंधा नहीं चल पाता। जिससे इन्हें भूखों मरने तक की नौबत आ जाती है। ऐसे फ्लेटों में अगर कभी किन्नर जाना भी चाहे, तो वहाँ के सुरक्षा प्रहरी उन्हें वहाँ तक पहुँचने ही नहीं देते, जिस कारण इन्हें जानकारी नहीं मिल पाती। बढ़ती जनसंख्या के साथ ही बढ़ती सोसाइटियों के कारण किन्नरों के व्यवसाय में आई कमी को यमदीप उपन्यास की मेहताब गुरु मानवी को बताती है-

"जब से शहरों में ऊँची ऊँची बिल्डिंगों की बढ़ोतरी हुई है, उसके धंधे में मंदी आई है। पहले तो मोहल्ले में घुसते ही किसी ना किसी से हँसी मजाक में पता चल जाता था कि किस घर में बच्चा पैदा हुआ है, पर अब तो बच्चे भी कम पैदा हो रहे हैं और उस पर से चार-पाँच मंजिल वाली बिल्डिंगों में तो उन्हें कोई घुसने ही नहीं देता। सभी अपना-अपना दरवाजा बंद किए घरों में कैद। किसी को किसी से मतलब ही नहीं। पड़ोस में किसके घर खुशी पड़ी या गमी, इससे भी बेखबर रहते हैं लोग।"[4]

इन्हीं कारणों से किन्नरों ने अपने बधाईगिरी के व्यवसाय को चलाने एवं उसे आगे बढ़ाने के लिए बदलाव के साथ ही नए बाजार खोज उपाग़मों का विस्तार किया है। महानगरों में किन्नर अपने साथ-साथ हर मंडली में एक खबरियें को रखते हैं, जो उन्हें बड़ी-बड़ी सोसायटियों में नए बच्चे के जन्म व अन्य प्रकार की सूचनाएँ उपलब्ध करवाते हैं। हिजड़े इन खबरियों को अपने कार्य के बदले अच्छी खासी रकम भी मुहैया कराते हैं, जिनसे इनका खर्चा आराम से चले। यह खबरियें अधिकांशत: बेरोजगार युवक-युवतियाँ या महिलाएँ होती हैं। जो उसे सोसाइटी में रहने वाली हो।

तीसरी ताली उपन्यास में भी दिल्ली की सिद्धार्थ एनक्लेव सोसाइटी में किन्नर अपनी पहुँच नहीं बना पाते। इस हेतु वे वहाँ आनंदी आंटी नाम की महिला को अपना खबरिया बनाते हैं, जो उन्हें सारी जानकारी उपलब्ध कराती है। "वैसे भी आनंदी आंटी हिजड़ावादी थी। हिजड़ों की हमदर्द। हिजड़ों को लेकर उनकी एक नस दबी थी। वे उनके घर आते जाते-रहते थे। वे वहीं कॉलोनी की अच्छी-बुरी खबरें हिजड़ो तक पहुंचाती थी। हिजड़ा मंडलियाँ आमतौर पर अपनी खबरियों को अपने पैसे से कमरा किराए पर ले कर देती हैं। फुल टाइम खबरियें। सुबह से शाम तक बच्चों के जन्म से लेकर खुशी के मौकों की छानबीन मे व्यस्त।"[5]

Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 68, December 2020

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 68, दिसंबर 2020

रोजगार के साधनों की अनुपलब्धता एवं बधाईगिरी जैसे परंपरागत व्यवसाय की कमी के कारण किन्नर ना चाहते हुए भी मजबूरीवश देह व्यापार के गर्त में गिरते जाते हैं। कुछ स्थानों पर मंडलियों में किन्नर गुरु अपने समुदाय के किन्नरों को यौन व्यापार में लिप्त नहीं होने देते। जो किन्नर यौन कर्मी के रूप में कार्य करते हैं, उन्हें समुदाय से निष्कासित कर दिया जाता है। परंतु आर्थिक विषमता के कारण वर्तमान में कई घरानों में किन्नर गुरु अपने चेलों को वेश्यावृत्ति करने की छूट दे देते हैं। यमदीप उपन्यास की महताब गुरु भी अपने समुदाय के किन्नरों को वेश्यावृत्ति के दलदल में धँसता देख अपने चेलों को शारीरिक संबंध बनाने की छूट दे देती है। वह अपनी चेली नाजबीवी को गिरिया रखने की स्वीकृति देती है, जिससे नाजबीवी का भरण पोषण भी हो जाए और वह उसकी अन्य चैलियों जुबेदा तथा सोबराती की तरह यौन रोग से ग्रस्त ना हो।

विभिन्न ठिकानों में गुरु द्वारा अलग-अलग शर्तें रखी जाती है। नीरजा माधव इन परिस्थितियों के संबंध में लिखती हैं- "इन परिस्थितियों को देखते हुए इनके गुरु का ढका मुदा अपरोक्ष आदेश होता है कि जीविकोपार्जन के लिए यदि यह रास्ता चुनना ही पड़े तो किसी एक पुरुष के साथ ही समलैंगिक संबंध बनाया जाए ताकि sexually transmitted desease से बचा जा सके। वह पुरुष अच्छी कमाई करने वाला हो ताकि अपने रखैल हिजड़ों का भरण पोषण का इंतजाम कर सके। ऐसे भरण पोषण देने वाले रखैल सामान्य पुरुष को हिजड़े अपनी भाषा में एक 'गिरिया' कहते हैं और जो हिजड़ा उस पुरुष का समलैंगिक संबंध बनाने वाला रखैल बनता है उसे अपनी सांकेतिक भाषा में 'कोती' कहते हैं।"[6]

परिवार एवं समाज से परित्यक्त होने के कारण किन्नरों को रोजगार विहीनता का दंश भी झेलना पड़ता है। इन्हें ना तो उचित शिक्षा मिल पाती है ना ही रोजगार हेतु किसी तरह का व्यवसायिक प्रशिक्षण। अपनी शारीरिक आकृति एवं हाव भाव के कारण इन्हें कोई भी सम्मानजनक कार्य नहीं मिल पाता। यदि कोई किन्नर अपनी पहचान छुपा कर नौकरी प्राप्त कर भी लें तो उनके हिजड़ा होने का पता चलते ही उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ता है। कार्यस्थल पर इन्हें शारीरिक, मौखिक तथा यौनिक दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ता है। मानोबी जो पढ़ी-लिखी ट्रांसजेंडर है, जिसने अपनी काबिलियत के दम पर सरकारी कॉलेज में आचार्य का पद प्राप्त किया। उन्हें भी अपनी लैंगिकता के कारण कार्यस्थल पर उत्पीड़न झेलना पड़ता है।

सामान्य जनमानस की तरह हिजड़ा व्यक्ति भी स्वाभिमानी होता है। सम्मानजनक रोजगार प्राप्त करने की आशा रखता है जिससे वह आत्मनिर्भर बन जीवनयापन कर सके। विभिन्न उपन्यासों में अनेक ऐसे पात्र हैं, जो इसी उम्मीद से संघर्ष करते हैं कि उन्हें समाज में योग्य स्थान मिलेगा। 'मैं पायल...' उपन्यास की पायल इसी उम्मीद में पहले हलवाई की दुकान पर तथा बाद में क्रमशः चाय बेचने, सिनेमा हॉल में प्रोजेक्ट चलाने, जूते की दुकान पर काम करने एवं रेडियो पर कार्यक्रम प्रसारण करने आदि कार्य करती है। पायल की तरह ही 'पोस्ट बॉक्स नं. 203, नालासोपारा' उपन्यास का पात्र बिन्नी अर्थात विनोद भी कंप्यूटर कोर्स कर अच्छी नौकरी करना चाहता है। इसके

लिए वह हिजड़ागिरी को छोड़ गाड़ियाँ धोने का कार्य करता है तथा अपना कंप्यूटर कोर्स पूर्ण करने के बाद विधायक के घर पर कंप्यूटर ऑपरेटर बन कार्य करता है।

तीसरी ताली की विनीता एवं विजय भी ऐसे ही किन्नर पात्र हैं, जो हिजड़ा बिरादरी के परंपरागत पेशे को छोड़ अपनी अलग पहचान बनाते हैं। विनीता ब्यूटी पार्लर का कोर्स कर दिल्ली से सटे इलाके गाजियाबाद में गे वर्ल्ड नामक अपना हिजड़ों का ब्यूटी पार्लर/ सैलून खोलती है, तो वही विजय अपने किन्नर होने की सच्चाई को छुपाकर फोटोग्राफर बनता है। अपने संघर्ष को विजय मंजू के सामने जाहिर करता हुआ कहता है कि- "दुनिया के दंश से अपने आप को बचाने के लिए मैंने लगातार लड़ाई लड़ी और खुद को स्थापित किया। मैं नाचना-गाना नहीं, नाम कमाना चाहता था। भगवान राम के उस मिथक को झूठलाना चाहता था, जिसके कारण तीसरी योनि के लोग नाचने-गाने के लिए अभिशप्त हैं... परिवार और समाज से बेदखल हैं...।"[7]

समय के साथ आ रहे परिवर्तन से अब हिजड़ा परिवार भी अछूता नहीं है। हिजड़ों की नई आने वाली पीढ़ी हिजड़ेपन और उससे मिलने वाली यंत्रणा से मुक्ति पाना चाहती है। ताकि वह अपने समकक्ष नई पीढ़ी के सामान्य व्यक्तियों की तरह सम्मानजनक रोजगार प्राप्त कर सके। तीसरी ताली उपन्यास में हिजड़ों के भोपाल सम्मेलन में इसी मुद्दे को उठाया गया था। जिसमें भाषण देते समय एक किन्नर के कथनानुसार अब किन्नरों हेतु भी परंपरागत व्यवसाय से अलग रोजगार की संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

"पटना नगरपालिका में दिहाड़ी पर हिजड़े रखने का प्रयोग सफल रहा था। हाउस टैक्स और वाटर टैक्स दबाए लोगों से रुपया वसूलने के लिए पालिका के अधिकारियों ने इनकी सेवाएं ली थी। टैक्स न देने वालों का जुलूस निकाल देते थे ये। इनके डर से ना जाने कितने लोगों ने लंबी-लंबी लाइनों में लगकर पालिका का टैक्स चुकाया। लाखों रुपए की वसूली एक महीने में हो गई थी। इनको टैक्स रिकवरी एजेंट के तौर पर पक्की नौकरी में रखने के लिए पालिका गंभीरता से विचार कर रही थी।"[8]

देखा जाए तो अब किन्नरों द्वारा आपने परंपरागत पेशों को नकार अपनी नई पहचान बना दुनिया के सामने डटकर खड़ा रह सके, इस हेतु प्रयास किये जा रहे है। अपनी लैंगिकता से छुटकारा पाने तथा अपने अधूरे जननांग से ऊपर उठ अपनी बौद्धिक क्षमता के बल पर आगे बढ़ने के लिए प्रयास किया जा रहा है। इसी प्रयास को ध्यान में रखते हुए पोस्ट बॉक्स नं. 203, नालासोपारा का बिन्नी उपन्यास में एक स्थान पर कहता है "जननांग विकलांगता बहुत बड़ा दोष है लेकिन इतना बड़ा भी नहीं कि तुम मान लो कि तुम धड़ का मात्र वही निचला हिस्सा भर हो। मस्तिष्क नहीं हो, दिल नहीं हो, धड़कन नहीं हो, आँखें नहीं हो। तुम्हारे हाथ-पैर नहीं है। हैं... हैं... हैं, सब वैसे ही हैं, जैसे औरों के हैं। यौन सुख लेने देने से वंचित हो तुम, वात्सल्य सुख से नहीं।... सुनो- पहचानो। पहचानो! अपने श्रम पर जिओ। मनोरंजन की दक्षिणा पर नहीं। हिकारत की दक्षिणा जहर है, जहर। तुम्हें मारने का जहर। तुम्हें समाज से बाहर करने का जहर।"9

निष्कर्ष रूप में देखा जाए तो बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, गरीबी आदि का दंश समाज में सर्वाधिक किन्नर व्यक्ति ही झेलता है। परंपरागत व्यवसाय में आयी कमी एवं मंदी इन्हें देह व्यापार के गर्त में डुबो देती है। जिससे बाहर निकलना इनके लिए असंभव है। अपनी दो जून की रोटी के जुगाड़ में ही फँसे इस समुदाय को अपने अधिकारों शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ सभी से ना उम्मीद ही मिलती है। किन्नरों की आर्थिक स्थिति पर चर्चा करते हुए मिलन विश्नोई लिखती हैं, "परिवार का सहारा उन्हें बचपन से ही छूट जाता है तो उनको जीने के लिए पैसों की जरूरत तो रहती है क्योंकि उनका जीवन संघर्षों से भरा हुआ है उसके पास शरीर बेचने के अलावा कोई अन्य साधन नहीं रहता है। वे सेक्स वर्क करते हैं उससे तनाव ग्रसित होते और अनेक प्रकार की बीमारियों के शिकार बन जाते हैं। लोग उन पर अत्याचार करते हैं, क्रूर व्यवहार करते हैं, इसलिए किन्नर लोगों की आर्थिक स्थिति बेहद खराब है। वे अपनी जरूरतों को पूरी करने के लिए नाचना, गाना और बार में डांस करना या फिर घरों में बधाई देने का कार्य करते हैं। लेकिन आज के समय बधाई का काम बहुत कम हो गया और कुछ लोग तो अपनी मर्जी से अच्छी खासी नेग इनको दे देते परंतु हर एक समाज में लोग ऐसे नहीं होते हैं तो हिजड़े लोगों को इतनी नेग नहीं देते। फिर इनका गुजारा करना मुश्किल है।"[10]

इस आधार पर देखा जाए तो विभिन्न सरकारी योजनाओं की सबसे अधिक आवश्यकता किन्नर समुदाय को ही है परंतु यह भी एक विडंबना है कि यह योजना किन्नर व्यक्ति तक पहुंच ही नहीं पाती। इस हेतु प्रशासन, सामान्य जन एवं स्वयं किन्नर तीनों जिम्मेदार हैं।

संदर्भ

1. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी : मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी! (शशिकला राय, सुरेखा बनकर), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ. 55
2. प्रदीप सौरभ : तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ.165
3. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी : मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी! (शशिकला राय, सुरेखा बनकर), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ. 143
4. नीरजा माधव : यमदीप, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 42
5. प्रदीप सौरभ : तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ.13
6. नीरजा माधव : किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय (कुछ सत्य, कुछ तथ्य), ए. बी.एस प्रकाशन, वाराणसी, 2019, पृ. 42
7. प्रदीप सौरभ : तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 195
8. वही, पृ. 178
9. चित्रा मुद्गल : पोस्ट बॉक्स न. 203, नालासोपारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 50

10. मिलन विश्नोई : मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी! में किन्नर-विमर्श, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2018, पृ. 67